भ्राता जगदीश चन्द्र जी का संक्षिप्त परिचय

भ्राता जगदीश चन्द्र जी कजन्म 10-09- 1929 को ऋषियों-- मुनियों के लिए प्रख्यात शहर मुलतान की पवित्र भूमि पर हुआ। बाल्यकाल से ही उनकी आध्यात्मिकता में बहुत रुचि थी तथा इसी अभिरुचि को तृप्त करने के लिए उन्होंने भारतीय दर्शन, वैदिक संस्कृति एवं विश्व के विभिन्न धर्मों का गहन अध्ययन किया। सन् 1952 में इन्होंने ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त किया। सन् 1953 में इन्होंने ईश्वरीय यज्ञ में समपिर्त हुए। ईश्वरीय विश्व विद्यालय भारत आने के बाद भ्राता जगदीश चन्द्र जी ही प्रथम भाई थे जो ईशवरीय सेवार्थ यज्ञ में समपिर्र हुए। इसलिए अव्यक्त बापदादा इनको ईश्वरीय सेवा के आदिरत्न कहा करते थे। परमपिता परमात्मा शिव ने इनको संजय नाम दिया था। ये ईश्वरीय विश्व विद्यालय के मुख्य प्रवक्ता थे।

भ्रातागदीश चन्द्र जी ने राजयोग जैसी जटिल व गुह्य विद्या पर शोधकार्य किया तथा उसकी व्याख्या अत्यन्त सरल, सुबोध एवं सुरुचिपूर्ण शब्दों में की। उन्होंने राजयोग, मानवीय मूल्यों, आध्यात्मिकता एवं समसामयिक विषयों पर लगभग 200 से भी अधिक हिन्दी, अंग्रेजी और उर्दु भाषाओं में पुस्तकें लिखीं। ये ईश्वरीय विश्व विद्यालय की तीन मुख्य पत्रिकाओं- ज्ञानामृत, वर्ल्डरिन्युवल तथा प्योरिटी के प्रधान सम्पादक रहे और भारतीय एडीटर्स गिल्ड के सदस्य भी थे।

भ्राता जगदशी चन्द्र जी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व सब-कुछ जैसे सम्पूर्ण मानवता के लिए ही था। अक्सर कहा जाता था कि वे सच्चे धधीचि थे। उन्होंने अपने शरीर की परवाह न करते हुए भी अन्तिम श्वास तक मानवता की अखण्ड सेवा करके यह सिद्ध कर दिखाया कि यदि मनोबल ऊँचा हो तो दुनिया का कोई भी कार्य असम्भव नहीं है। इन्होंने 12 मई 2001 को मधुबन पवित्र भूमि पर अपने पार्थिव शरीर का त्याग किया।